संदेश दो

हमारी परम्परा के बजाय सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह को जीना

शास्त्र अध्ययन: इफि. 3:11, 16-17; फिलि. 1:20-21; कुलु. 1:15, 18, 27; 3:4, 10-11

I. **बाइबल का केन्द्रिय विचार यह है कि परमेश्वर चाहता है कि हम एक नया मनुष्य, मसीह की देह के रूप में कलीसिया के लिए मसीह को जीयें-फिलि. 1:21; इफि. 2:15-16:**

A. परमेश्वर का इरादा है कि हम मसीह से संतृप्त, व्याप्त, भरे और ढके जाएं ताकि हम मसीह को जीयें-3:17; गला. 2:20; 3:27; 4:19

B. मसीही जीवन वह जीवन है जिसमें मसीह के विश्वासी मसीह को जीते हैं और उसे बढ़ाते हैं-फिलि. 1:20-21

C. मसीह को जीना एक व्यक्ति को जीना है, स्वयं मसीह को जीना है-कुलु. 1:27; रोम. 8:10:

1. यदि हम मसीह को जीना चाहते हैं, तो हमें उसे हमारे व्यक्ति के रूप में लेना चाहिए और उसके साथ एक व्यक्ति होना चाहिए; उसे और हमें एक व्यवहारिक तौर पर एक होना चाहिए- 1 कुरि. 6:17

2. यदि हमारे पास इस बारे में प्रकाशन है कि कैसे मसीह का स्थान हमारे दैनिक जीवन में बदलता है, तो हम प्रभु से अंगीकार करेंगे कि उसे जीने के बजाय हम कई अन्य चीज़ों को जीते हैं, यह कि हम मसीह द्वारा जीने के बजाय परम्परा द्वारा अधिक जीते हैं- 1 युहन्ना 1:7

D. कारण कि हम मसीह को नहीं जीते हैं यह है कि हम मसीह के साथ गठे नहीं गये हैं; जिससे हम गठे होते हैं उसी से हम जीते हैं-कुलु. 3:4, 10-11; इफि. 3:17

II. **सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह बनाम कलीसिया के संबंध में, हमें यह देखने की जरूरत है कि बाइबल में सम्पूर्ण प्रकाशन के अनुसार, परमेश्वर का इरादा अपने चुने, छुड़ाए और नया जन्म प्राप्त लोगों में खुद को मसीह में कार्य करना है-गला. 1:15-16; 2:20; 4:19:**

A. परमेश्वर का केन्द्रिय कार्य, उसका अद्वितीय कार्य, संसार में और सभी युगों और पीढ़ियों के दौरान अपने चुने हुए लोगों में खुद को मसीह में कार्य करना है, उनके साथ अपने आपको एक बनाना है-इफि. 3:17; 1 कुरि. 6:17:

B. परमेश्वर का इरादा मसीह में खुद को हमारे अंदर पूर्ण रूप से कार्य करना है, खुद को हमारा आंतरिक तत्व बनाना है-इफि. 3:11, 16-19

C. परमेश्वर के अनंत गृह प्रबंध को पूरा करने के लिए, परमेश्वर को मसीह में खुद को हमारे अंदर निर्माण करने की जरूरत है, जीवन और स्वभाव में नाकि परमेश्वरत्व में हमें परमेश्वर बनाने के लिए अपने जीवन, अपने स्वभाव, और अपने गठन के रूप में मसीह को खुद में हमारे अंदर निर्मित करना है-2 शामू. 7:12-14; रोम. 1:3-4; इफि. 3:17; युह. 14:23; कुलु. 3:10-11:

1. हमें हमारे आंतरिक गठन में स्वयं परमेश्वर को मसीह में निर्मित करने की जरूरत है ताकि हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व मसीह से पुन:गठित हो-इफि. 3:17

2. मसीह हमारे सम्पूर्ण प्राण में रहने के लिए हमारी आत्मा में आने के द्वारा और हमारी आत्मा से हमारे मन, भावना और इच्छा में खुद को फैलाने के द्वारा कलीसिया का निर्माण करता है-मत्ती. 16:18; इफि. 3:17

III. **यह कह कर कि मसीह परम्परा के विपक्ष पर है, हम नहीं कह रहें कि हमें अपनी परम्परा को छोड़ देनी चाहिए और कुछ भी हो बगैर किसी परम्परा के जीना चाहिए-कुलु. 3:10-11:**

A. जिनके पास मसीह नहीं है उन्हें निस्संदेह परम्परा के अनुसार जीना चाहिए, क्योंकि परम्परा लोगो को संरक्षित, नियंत्रित और सुधारती है।

B. सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह को ग्रहण करने से पहले सबको परम्परा की जरूरत पड़ती है।

C. हमारा मसीह को ग्रहण करने के बाद, हमें परम्परा को मसीह को सीमित करने या मसीह को अनुभव और आनंद करने से रोकने नहीं देना चाहिए; बल्कि हमें मसीह के अनुसार, नाकि परम्परा के अनुसार जीना सीखना शुरू करना चाहिए-2:6-7

IV. **चूंकि हमने मसीह को ग्रहण किया है, हमें परम्परा को उसका स्थानापन्न बनने नहीं देना चाहिए-कुलु. 2:6; 3:10-11:**

A. हर प्रकार की परम्परा मसीह के विरूद्ध है, और मसीह हर प्रकार की परम्परा के विरूद्ध है-आ. 11:

1. कोई भी परम्परा, चाहे जिस प्रकार की भी परम्परा हो, यह मसीह के विरूद्ध है।

2. मसीह के अलावा, सबकुछ जो हमारे पास है और हर मानवीय उत्पाद और विकास परम्परा का एक हिस्सा है।

B. कारक जो मसीह के आनंद के फैलाव को सीमित करती है वह परम्परा है; सहज ही, हमारे अंदर की परम्परा हमें मसीह के वास्तविक अनुभव से अलग रखती है-फिलि. 3:3-9

C. क्योंकि हमारी परम्परा हमें मसीह को अनुभव करने, मसीह को आनंद करने और मसीह को जीने से रोकती है, हम प्रभु द्वारा बहुत बोझिल किये गये हैं कि प्रभु की पुन:प्राप्ति में संत अपनी परम्परा को प्रतिस्थातित करने के लिए मसीह को अपने जीवन और व्यक्ति के रूप में व्यवहारिक तौर पर लेना सीखेंगे-इफि. 3:17; कुलु. 3:4

D. मसीह में हमारे पास प्रभु को आनंद करने के लिए अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए अपनी परम्परा को अलग रखने की स्वतंत्रता है; हमारे भीतर का सब स्थान प्रभु को दिया जाना चाहिए।

E. यदि हमारी पूरी भीतरी क्षमता मसीह को उपलब्ध होती है, तो सहज ही हमारे भीतर की परम्परा मसीह से प्रतिस्थाति होगी जो हम में निवास करता है -1:27; 3:11

V. **यह महत्वपूर्ण है कि हम सर्व-सम्मिलितता और व्यापकता के मसीह के दर्शन को देखें; हमें मसीह के ऐसे दर्शन के बगैर अपनी परम्परा छोड़ने का प्रयास नहीं करना चाहिए-प्रेरितों 26:19; इफि. 1:17-23:**

A. मसीह जो हम में निवास करता है छोटा, सीमित मसीह नहीं है; वह एक व्यक्ति है जो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप, परमेश्वर की परिपूर्णता का देहरूप, और परमेश्वर के गृह प्रबंध का केन्द्र है-कुलु. 1:15, 18; 2:2, 9-10:

1. ऐसा मसीह अब हम में निवास करता है और खुद को हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व में फैलाने का अवसर पाने की प्रतीक्षा कर रहा है-1:27

2. इस मसीह को हमारे दैनिक जीवन में सबकुछ होना चाहिए, और परम्परा को अपने जीने में कोई स्थान न देते हुए हमें उसे जीना चाहिए-फिलि. 1:21; कुलु. 3:11

B. ज्यों ही हम सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह के दर्शन को देखते हैं, हमें अपनी पारम्पारिक पृष्ठभूमि को एक ओर रखना आरम्भ कर देना चाहिए और इस मसीह को प्रतिस्थापित करने या प्रतिबंधित करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए-प्रेरितों 9:4-5; 26:19; फिलि. 3:7-10:

1. हमें अपने जीने में परम्परा को कोई स्थान लेने नहीं देनी चाहिए।

2. बल्कि, हमारे भीतर के सभी स्थान सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह को दिये जाने चाहिए जो हमारे अंदर निवास करता है-कुलु. 1:27

C. यदि हम अंतर्निवासी, सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह के ऐसे दर्शन को देखते हैं, जो हम सहज ही अपनी परम्परा छोड़ देंगे-3:10-11:

1. पहले, मसीह परम्परा से बदला गया था, लेकिन एक बार जब हम इस दर्शन को देखते हैं, तो हमारे भीतर की परम्परा मसीह से बदली जायेगी-आ. 11

2. अपनी परम्परा को छोड़ने के बजाय, हमें बस मसीह को जीना चाहिए और मसीह हमारी परम्परा को खुद से बदल देगा-फिलि. 1:21

D. जब हम मसीह को जीते हैं, हम सहजता से परम्परा से छुड़ाये जाते हैं, और खुद ब खुद मसीह जिससे हम जीते हैं हमारी परम्परा का स्थान लेता है; यह कुलुस्सियों की पुस्तक में प्रकाशन है-1:15, 18, 27; 2:2, 9-10; 3:4, 10-11

© 2020 Living Stream Ministry